ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 47 कुल पृष्ठ-8 27 जनवरी से 2 फरवरी, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 मा.कृ.-10

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़, राजस्थान में
प्रसिद्ध दानवीर श्री दीन दयाल गुप्त, अध्यक्ष डॉलर फाउण्डेशन द्वारा नव–निर्मित यज्ञशाला में

35वाँ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ सम्पन्न

आर्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् और कन्या गुरुकुल के संचालक आचार्य सोमदेव शास्त्री सपत्नीक बने यजमान

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी का रहा विशेष सान्निध्य

विख्यात युवा वैदिक विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने यज्ञ के ब्रह्मा पद को किया सुशोभित

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़, राजस्थान के प्रांगण में प्रसिद्ध दानवीर सेठ दीनदयाल गुप्त द्वारा दान दी गई राशि से नव–निर्मित भव्य यज्ञशाला का विधिवत उद्घाटन मकर संक्रांति 14 जनवरी, 2022 को होना निश्चित किया गया था, किन्तु कोरोना के नियमों का पालन करते हुए यह महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम स्थगित करके आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने अपने संकल्प को पूरा करते हुए 35वाँ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ 14 से 16 जनवरी, 2022 तक आयोजित किया। विदित हो कि आचार्य सोमदेव जी ने अपने जीवन में कम से कम 50 वेद पारायण यज्ञ करने का संकल्प लिया हुआ है। वे गत् लगभग 30 वर्ष से अपने पैतृक गाँव नेनौरा, जिला–मंदसौर, मध्य प्रदेश में करते चले आ रहे हैं। किन्तु गत दो वर्ष से कोरोना महामारी के सख्त नियमों के चलते ये यज्ञ गाँव में सम्भव नहीं हो सके, तब आचार्य जी ने पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में जहाँ वे वर्तमान में कन्या गुरुकुल के संचालक की भूमिका निभा रहे हैं वहाँ अपने संकल्प को पूरा करते हुए प्रतिवर्ष वेद पारायण यज्ञ भी कर रहे हैं। यह भी ज्ञातव्य है कि वेद पारायण यज्ञ का सम्पूर्ण व्यय आचार्य जी अपने व्यक्तिगत साधनों से ही करते हैं और यह खर्च गुरुकुल पर नहीं डालते, न ही इसके लिए अलग से धन–संग्रह करते हैं। आचार्य सोमदेव जी का यह संकल्प अद्वितीय है। एक विद्वान् जो स्वयं सैकड़ों वेद पारायण यज्ञ विभिन्न आर्य समाजों, गुरुकुलों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं में सम्पन्न करा चुके हों उनके द्वारा प्रतिवर्ष लाखों रुपये के व्यय से स्वयं यजमान बनकर वेद पारायण यज्ञ कराना एक अनुकरणीय उदाहरण है। इस त्रिदिवसीय वेद पारायण यज्ञ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं युवा आर्य संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी के अतिरिक्त युवा वैदिक विद्वान् आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक, गुरुकुल पौंधा, देहरादून के आचार्य डॉ. धनंजय जी, आदिवासी क्षेत्र में समर्पित भाव से सेवा कार्यों में संलग्न कन्या गुरुकुल के मजबूत स्तम्भ श्री जीववर्धन शास्त्री जी, आर्य भजनोपदेशक परिषद् के कोषाध्यक्ष पं. नरेश दत्त आर्य जी व उनके सहयोगी श्री भीष्म जी आर्य आदि विद्वान् भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। गुरुकुल पौंधा

के ब्रह्मचारियों ने सस्वर वेद पाठ करके अपनी विशेष भूमिका निभाई।

14 जनवरी, 2022 मकर संक्रांति के दिन प्रातः 9 बजे आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ प्रारम्भ हुआ जिसमें आचार्य सोमदेव शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री ने यजमान का आसन ग्रहण करके यज्ञ को आरम्भ कराया। बाद में उनके छोटे सुपुत्र श्री अनिरुद्ध जी भी चेन्नई से चित्तौड़गढ़ पहुंचे और उन्होंने भी अपने माता–पिता के संकल्प को पूरा करने में श्रद्धा एवं समर्पण के साथ सहयोग किया। तीनों दिन प्रातः व सायं यज्ञ, भजन व उपदेश का कार्यक्रम व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से चलता रहा। वर्षा एवं कंपा देने वाली ठंड के बावजूद यज्ञप्रेमी महानुभावों ने श्रद्धा के साथ यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ में नेनौरा, खेड़ा व आस–पास के अन्य ग्रामों से भी स्त्री–पुरुष सम्मिलित

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अपराधों से आतंकित समाज – कारण और निवारण

– डॉ. अर्चना प्रिय आर्या

आज चारों ओर भय एवं आतंक का वातावरण बना हुआ है। मनुष्य की अन्तरात्मा इस भय और आतंक के वातावरण से मुक्त होने के लिए चीत्कार कर रही है। समाज का स्वरूप घृणित एवं विकृत होता जा रहा है। भारत का जो समाज समस्त विश्व के लिए एक आदर्श बना हुआ था, वही समाज आज निरन्तर पतन की ओर अग्रसर होता जा रहा है। इन सबका कारण क्या है? यदि इस प्रश्न की ओर ध्यान दिया जाये तो हम इसी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि आज समाज के अन्दर कुछ ऐसे तत्व जन्म ले रहे हैं जिन्हें अपराधियों की संज्ञा दी जाती है। अब प्रश्न यह उठता है कि अपराध क्या है? वास्तव में जो कार्य अनैतिक होते हैं, समाज के विरूद्ध होते हैं अथवा दूसरे शब्दों में कहा जाये कि जिन कार्यों को हम और आप या यह संसार हेय दृष्टि से देखता है उन्हें अनैतिक घोषित करता है, मानव कल्याण के विरूद्ध बताता है, वह कार्य अपराध कहलाता है।

वर्तमान समाज में चोरी, डकैती, लूटपाट, हत्या, बलात्कार, अपहरण की घटनाएँ आम सी हो गई है। कदम–कदम पर जैसे अपराधियों का जाल सा बिछ गया है, मानवता जैसे समाप्त होती जा रही है। हमारी प्रगति के मार्ग जैसे अवरूद्ध से हो गये हैं, हमारे देश का विकास रूक गया है, देश की आन्तरिक व्यवस्था लड़खड़ा सी गई है। अगर इस दिशा में शीघ्र ही कोई कदम न उठाया गया इनका कोई समाधान ढूँढ़ने की कोशिश नहीं हुई तो निश्चित ही वह दिन दूर नहीं जब हमारे देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किये गये समस्त बलिदान व्यर्थ हो जाएँगें। देश की स्वाधीनता को कायम रखने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि उन सभी कारणों को खोजा जाये जो कि अपराध जगत के जन्म के लिए उत्तरदायी हैं। यदि इस विषय पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि कुछ कारण ऐसे हैं जो मानव को विवश कर देते हैं अपराध जगत में पदार्पण करने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्त को ठुकराने के लिए और उसे इन्सान की खाल में भेड़िया बनने के लिए कोई भी व्यक्ति अपराधी क्यों बनता है? इसके लिए एक सीमा तक उसका वंशानुक्रम उत्तरदायी होता है। जिस व्यक्ति का वंशानुक्रम अच्छा है वह अच्छा एवं सुयोग्य नागरिक बनता हुआ दिखाई देता है और जिन व्यक्तियों के पिता या पूर्वज अपराधी रहे होते हैं, वे स्वयं भी अपराधी ही बनते नजर आ रहे हैं क्योंकि कहा भी है – ''खोदेंगे ही बिल चूहे के जाये'' जीव विज्ञान ने आज इस तथ्य को सिद्ध कर दिया है कि वंशानुक्रम का बच्चे के विकास में बड़ा योगदान है। लेकिन यदि हम मान लें कि बच्चा अपराधी केवल इसलिए बनता है कि उसका वंशानुक्रम दोषपूर्ण रहा तो यह हमारा एक पक्षीय विचार होगा। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से कारण भी बच्चे के अन्दर अपराधवृत्ति जाग्रत करने के लिए उत्तरदायी हैं।

बच्चों को अपराधी बनाने में सबसे बड़ा योगदान समाज का भी होता है। यह समाज ही तो है जो एक बच्चे को क्रूर अत्याचारी तथा भयंकर अपराधी बना देता है और दूसरी ओर कहें तो सुयोग्य नागरिक बनाने में समाज का योगदान रहता है।

बहुत से व्यक्ति अपराधी इसलिए बन जाते हैं कि समाज उनको उपेक्षा की दृष्टि से देखता है जिससे उनके हृदय में हीन भावना घर कर लेती है और तब वह समाज से प्रतिशोध लेने की भावना से अपराधियों की दुनियाँ में कूद जाते हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश के सामने विकट समस्या गरीबी और अमीरी की है। एक ओर ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी हुई हैं जिनमें अमीर व्यक्ति ऐश कर रहे हैं, विलासिता में मग्न हैं तो दूसरी ओर फुटपाथ पर दाँत किटकिटाती हुई ठंड में भूखे और नंगे प्राणियों का करूण क्रन्दन है। कहने का तात्पर्य है कि गरीबी अमीरी के बीच गहरी खाई आज बनी हुई है। गरीबी और अमीरी के इस अन्तर ने न जाने कितने व्यक्तियों को विवश कर दिया शराफत का जामा उतार फेंकने के लिए विचारणीय विषय है कि कोई व्यक्ति कब तक अन्याय सहन कर सकता है।

फुटपाथ पर पड़ा हुआ एक भूखा एवं नंगा व्यक्ति जब अमीरों की अट्टालिकाओं की ओर देखता है तो उसका हृदय तीव्र वेदना से भर जाता है। वह सोचने लगता है कि आखिर इस व्यक्ति में ही कौन सा चमत्कार है जो यह राजा महाराजा की तरह ऐशो–आराम करे और मैं भूखा नंगा तड़फता रहूँ। उसके मन में ईर्ष्या की अग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है और उसे लूटपाट, चोरी, डकैती आदि की वृत्ति अपनाने के लिए विवश कर देती है और है भी

तन की हवस मन की गुनहगार बना देती है,
बाग के बाग को बीमार बना देती है।
भूखे पेट को देश भक्ति सिखाने वालो,
भूख इन्सान को गद्दार बना देती है।।

यदि आपने अपने इतिहास की तरफ देखा हो तो इस बात का साक्ष्य मिलता है कि हमारे देश में जितने डकैत आदि बने वह हमारे ही द्वारा बनाये गये थे और आज भी देखने को मिलता है कि जो लोग अपराधी बनते हैं उनके ज्यादातर अपराधी बनने का कारण होता है कि समाज के ठेकेदार उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाकर पैसे के बल पर सज़ा दिलवा देते हैं। तब प्रतिशोध की भावना इन्हें विवश करती है ये सब करने के लिए समाज के इन ठेकेदारों ने ही समाज को विकृत कर डाला है।

वेश्यावृत्ति जो कि एक भयंकर अपराध है समाज के मस्तक पर कलंक है, वह भी तो इन्हीं की देन है। मैंने जब एक वेश्या से पूछा कि क्या तुम्हें इस प्रकार से समाज को कलंकित करना अच्छा लगता है तो उसने कहा कि 'एक दिन वह था जब मैं अबला नारी दर–दर की ठोकरें खा रही थीं, अपने लिए आश्रय खोज रही थी, समाज के इन ठेकेदारों ने मुझे कलंकित कर दिया फिर 'कलमुँही' और न जाने कितनी उपाधियों से इस समाज ने मुझे विभूषित कर दिया, तब मैंने सोचा क्यों न इस घृणित समाज के ऊपर मैं कलंक बन जाऊँ, क्यों न इस समाज को तहस–नहस कर दूँ।

वास्तव में मानव अपने आप इस प्रश्न का समाधान करने की कोशिश करे कि समाज का उसके जीवन में क्या महत्त्व है तो पता चलेगा कि अच्छा या बुरा समाज हमको बहुत कुछ सिखाता है। बच्चा जब इस समाज में आता है तो वह यह भी नहीं जानता कि उसकी माँ कौन है और पिता कौन? इन सम्बन्धों का ज्ञान भी बच्चा समाज में आकर करता है। परिवार में जिस प्रकार का वातावरण बच्चे को मिलता है, वह उसी प्रकार का बनने की कोशिश करता है यदि परिवार में उसे अनुकूल एवं प्रेम तथा स्नेह का वातावरण मिलता है तो बच्चा एक ऐसा इन्सान बन जाता है जो कि संसार के लिए एक आदर्श होता है। इसके विपरीत यदि परिवार में कलहपूर्ण वातावरण रहता है घर का प्रत्येक सदस्य अपने आप में ही खोया रहता है आपस में एक दूसरे के बीच खिंचाव की भावना बनी रहती है या बच्चों के ऊपर माता–पिता का समान स्नेह नहीं रहता तो बच्चा अपने आपको हीन समझने लगता है। परिणाम यह होता है कि उसकी यह हीनता की ग्रन्थि आक्रोश में बदल जाती है और वह समाज का खतरनाक शत्रु बन जाता है। किसी विद्वान ने ठीक कहा है कि ''प्राणी के लिए संसार में सबसे बड़ा और सबसे पहला विद्या मन्दिर उसका परिवार होता है। यद्यपि किसी भी घर में प्रत्यक्ष रूप से विद्यालयों की तरह शिक्षा नहीं दी जाती है लेकिन फिर भी परिवार का वातावरण प्राणी को कुंठाओं से युक्त इस प्रकार का बना देता है कि वह समाज का मुकाबला नहीं कर पाता तथा वही प्राणी को गद्दार बना देता है। वास्तव में मानव अपने ऊपर निर्भर नहीं होता है, वह तो पारिवारिक वातावरण का खिलौना मात्र होता है उसको बनाने और बिगाड़ने में सबसे बड़ा उत्तरदायित्व पारिवारिक वातावरण का होता है, अन्य सभी तो अंश मात्र के सहयोगी होते हैं।

आज हमारे देश में निरन्तर बेरोजगारी बढ़ती जा रही है जो कि वास्तव में अपराधों को प्रोत्साहित कर रही है क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। खाली बैठे–बैठे मनुष्य ऐसी विभिन्न योजनाएँ बनाता रहता है जो उसे भूखा मरने से बचा सके और जब वह उन योजनाओं को कार्यान्वित करता है तो जेब कतरों, लुटेरों, चोरों आदि के दर्शन होते हैं।

वर्तमान शिक्षा रोजगारोन्मुखी नहीं है। अतः जब विद्यार्थी डिग्रियाँ लेकर निकलता है तो दर–दर ठोकरें उसका स्वागत करती हैं। उसे भटकने के सिवाय और कुछ प्राप्त नहीं होता है। दूसरी ओर भ्रष्टाचार अपनी चरमसीमा से अधिक व्याप्त हो गया है। अयोग्य व्यक्ति रिश्वत के सहारे चुन लिये जाते हैं और योग्य व्यक्ति चुनने से केवल इसलिए वंचित रह जाते हैं कि उनके पास चयनकर्ताओं की पूजा करने के लिए धन–दौलत नहीं होती या किसी मंत्री आदि की सिफारिश नहीं होती। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति कुंठित हो जाते हैं और ऐसे कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं जिन्हें हम और आप अनैतिक कार्य की संज्ञा देते हैं घृणित दृष्टि से देखते हैं अर्थात् अपराध करना शुरू कर देते हैं। वर्तमान समय में हमारे देश में हमारी सभ्यता और संस्कृति के ऊपर पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति हावी होती जा रही है जिसके कारण हम उस धर्म को भूल गये हें जिसके भय से हम अपराध करने से डरते थे। अब तो स्वार्थपूर्ति ही हमारा लक्ष्य बन गया है और हमारी भावना ही बन गई है। इस कारण बहुत से व्यक्ति न चाहते हुए भी अपराध की दुनियाँ की ओर मुड़ रहे हैं।

अस्वस्थ मनोरंजन जैसे सिनेमा आदि भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। इसमें दिखाई जाने वाली हिंसात्मक प्रवृत्ति से अपराधी इसलिए बन जाते हैं कि सिनेमा में उनकी पसंद का कलाकार खलनायक बनता है। मदिरा का प्रभाव भी काफी हद तक इस विषय के लिए उत्तरदायी है। मदिरापान करने के पश्चात् अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है जिससे वह असामाजिक और अनैतिक कार्य करने लगता है।

इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से और भी कारण हो सकते हैं जो कि अपराध जगत के जन्म एवं विकास के लिए उत्तरदायी हैं। लेकिन कुछ भी सही यदि हमें अपने समाज और देश को आगे ले जाना है तो इन अपराधों को खत्म करने की दिशा में प्रयत्न करना होगा। इसके लिए हम सभी समाज के विकृत स्वरूप को बदलने की पहल करें। समाज की ऐसी अव्यवस्था को दूर करें जो किसी व्यक्ति को अपराधी जीवन बिताने के लिए विवश कर देती है। हमको चाहिए कि हम पारस्परिक वातावरण को समुचित बनायें। भ्रष्टाचाररूपी राक्षस से शक्ति के साथ निपटें व एक स्वच्छ समाज बनाने का प्रयत्न करें।

यदि हम अपने नैतिक स्तर को स्वार्थपूर्ति की भावना से परे विकसित करें तो निश्चय ही हम अपराधों को समाप्त करने में सक्षम होंगे और हमारा समाज पुनः खोई हुई प्रतिष्ठा और गौरव को प्राप्त कर सकेगा तथा एक बार फिर हमारा समाज तथा हमारा देश समस्त विश्व के लिए आदर्श बन सकेगा तथा फिर वह दिन होगा जब –

कहेगा जगत फिर से एक स्वर में सारा।
वही पूज्य भारत गुरू है हमारा।।

– ऊँचागाँव नसीरपुर, हाथरस, उ. प्र.

28 जनवरी जयन्ती पर विशेष

देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले आर्य समाजी नेता लाला लाजपत राय

आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है।

– लाला लाजपत राय

सुप्रसिद्ध देशभक्त तथा भारत की आजादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। उन्होंने वैश्य परिवार में जन्म लेकर क्षत्रियोचित गुण पाये थे। स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने वाले महापुरुषों में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी, उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेजी के समर्थ रचनाकार थे।

बाल्यकाल : लालाजी का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल के गांव ढुंढिके (जिला फरीदकोट, पंजाब) में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगरांव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे।

लाजपतराय की शिक्षा पांचवें वर्ष में आरम्भ हुई। 1880 में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एण्ट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आये। यहां वे गवर्नमेंट कालेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ. ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी (कानून) की परीक्षा साथ-साथ पास की। 1882 में ही वे लाहौर रहते हुए आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और उसके सदस्य बन गये। डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रथम प्राचार्य लाला (आगे चल कर महात्मा के नाम से प्रसिद्ध) हंसराज तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. गुरुदत्त उनके सहपाठी थे, जिनके साथ उन्हें आगे चलकर आर्यसमाज का कार्य करना पड़ा। इनके द्वारा ही उन्हें महर्षि दयानन्द के विचारों का परिचय मिला था।

30 अक्तूबर, 1883 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर आर्यसमाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चय हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई तो आर्य समाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के महान् स्तम्भ बने।

वकालत के क्षेत्र में :- लाला लाजपतराय ने एक मुख्तान (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवास स्थान जगरांव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी, किन्तु यह कस्बा बहुत छोटा था, जहाँ उनके कार्य के बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी। अतः वे रोहतक चले गये। रोहतक रहते हुए ही उन्होंने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की 1886 में वे हिसार आ गये। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष में वे लाहौर आये तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। लालाजी ने यों तो समाज सेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहां उन्होंने लाला चंदूलाल, पं. लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के क्रियान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्य समाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ जुड़ गये। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि0 जार्ज यूल ने की थी। 1907 में वे पं0 गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये। यहां से वे अमेरिका चले गये। उन्होंने एकाधिक बार विदेश यात्रायें की और वहां रह कर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहां के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों लोकमान्य तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल के साथ मिलकर कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक कांग्रेस ने एक राजभक्त संस्था का चरित्र बनाये रक्खा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होते और विनम्रतापूर्वक शासन के सूत्रधारों (अंग्रेजों) से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ठ करने की याचना करते। वे कभी-कभी औपनिवेशिक स्वराज्य की बात भी करते थे। उनदिनों कांग्रेस के अधिवेशनों की समाप्ति 'गॉड सेव दि किंग' के गाान के साथ होती थी। 1905 में जब बनारस में सम्पन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उसका डट कर विरोध किया। यों समझना चाहिएकि उस भाषण सेही कांग्रेस में गरम दल की नींव पड़ गई। कांग्रेस के मंच से यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी। इसे सुनकर अध्यक्ष पं. गोपालकृष्ण गोखले के दोनों ओर बैठे कांग्रेस के वयोवृद्ध नेता और विशेषतः मुम्बई के प्रतिनिधि तो कांपने लगे, डर से उनके चेहरे पीले पड़ गये। 1907 में जब पंजाब के किसानों में अपने अधिकारों को लेकर चेतना उत्पन्न हुई तो सरकार का क्रोध लाला जी तथा सरदार अजीतसिंह (शहीद भगतसिंह के चाचा) पर उमड़ पड़ा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ौसी देश बर्मा के मांडले नगर में नजरबंद कर दिया। देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किया गया और विवश होकर सरकार को अपना यह आदेश वापिस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आये और देशवासियों ने उनका भावभीना स्वागत किया। लाला जी के राजनैतिक जीवन की कहानी अत्यन्त रोमांचक तो है ही, भारतवासियों को स्वदेशहित के लिए बलिदान तथा

महान् त्याग करने की प्रेरणा भी देती है।

जन सेवा के कार्यः- लालाजी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे। उन्होंने जनसेवा का भी सच्चा पाठपढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 (इसे राजस्थान में छप्पन का अकाल कहते हैं, क्योंकि यह विक्रम का 1956 का वर्ष था) में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा तो लाला जी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकाल पीड़ित लोगों को सहायता पहुंचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म परिवर्तन करने का इरादा रखते थे। उन्हें इन मिश्नरियों के चंगुल से बचा कर उन्हें फिरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालयों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमांचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया?। इस समय भी लालाजी सेवा कार्य में जुट गये और डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प पीड़ितों को रहात प्रदान की। 1907-08 में उड़ीसा मध्य प्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लालाजी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

पुनः राजनैतिक आन्दोलन मेंः- 1907 सूरत के प्रसिद्ध कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास, दिलाने में सफल हो गये थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतंत्रता मिलने वाली नहीं है। हम यह देख चुके हैं कि जन-भावना को देखते हुए अंग्रेजों को उनके देश निर्वासन को रद्द करना पड़ा था। वे स्वदेश आये और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गये। प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1918 के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैण्ड गये और देश की आजादी के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहां से वे जापान होते हुए अमेरिका वासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहां उन्होंने इण्डियन होमरूललीग की स्थापना की तथा कुछ ग्रन्थ भी लिखे। 20 फरवरी, 1920 को जब वे स्वदेश लौटे तो अमृतसर में जलियां वाला बाग काण्ड हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गांधी ने असहायोग आन्दोलन आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गये। 1920 में ही वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। उन दिनों सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के त्याग, अदालतों का बहिष्कार शराब के विरुद्ध आन्दोलन, चरखा और खादी का प्रचार जैसे कार्यक्रमों को कांग्रेस ने अपने हाथ में ले रक्खा था, जिसके कारण जनता में एक नई चेतना का प्रादुर्भाव हो चला था। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिये गये।

1924 में लालाजी कांग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज पार्टी में शामिल हो गये और केन्द्रीय धारा सभा (सैण्ट्रल असेम्बली) के सदस्य चुन लिये गये। जब उनका पं. मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुंच गये। अन्य विचारशील नेताओं की भांति लालाजी भी कांग्रेस में दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। ध्यातव्य है कि उन दिनों हिन्दू महासभा का कोई स्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रम नहीं था और वह मुख्य रूप से हिन्दू संगठन अछूतोद्धार, शुद्धि जैसी सामाजिक कार्यक्रमों में ही दिलचस्पी लेती थी। इसी कारण कांग्रेस से उसका थोड़ा सा भी विरोध नहीं था।

यद्यपि संकीर्ण दृष्टि के अनेक राजनैतिक कर्मी, लालाजी के हिन्दू महासभा में रुचि लेने से नाराज भीहुए किन्तु उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं की और वे अपने कर्त्तव्यपालन में ही लगे रहे।

जीवन सन्ध्याः- 1928 में जब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्टूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुंचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लालाजी के नेतृत्व में नगर के हजारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गुंजा दिया। इस पर पुलिस को लाठी चार्ज का आदेश मिला। इसी समय अंग्रेज सार्जेंट साण्डर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुंची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा- मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। इस दारुण प्रहार से आहत लालाजी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोग कर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

बहुआयामी व्यक्तित्वः- लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाज सेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य सामज से ही उन्होंने देश सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबंधु चितरंजनदास की पत्नी श्रीमती बसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारत केसरी लालाजी की मौत का बदला ले सके।

जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मार कर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संगठन मंत्री श्री रमेश आर्य जी का असमय देहावसान

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संगठन मंत्री श्री रमेश आर्य जी का गत 16 जनवरी, 2022 को 55 वर्ष की आयु में असमय निधन हो गया है। श्री रमेश आर्य जी सदैव स्वामी अग्निवेश जी के निर्देशन एवं सान्निध्य में बंधुआ मुक्ति मोर्चा संगठन के माध्यम से समाज के दबे-कुचले, निर्बल एवं मजदूर वर्ग के उत्थान तथा समाज में उन्हें अन्य वर्गों के समान हक दिलाने के लिए कार्य करते रहे। वे आर्य समाज की गतिविधियों में भी विशेष योगदान देते रहते थे। सन् 1986 में हरिद्वार के कुम्भ मेले में आयोजित वेद प्रचार-शिविर के समय वे आर्य समाज से जुड़े और स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे। उन्होंने जन-जागरण यात्राओं एवं आर्य सम्मेलनों में अपना अमूल्य समय देकर विशेष योगदान भी देते थे। बाद में वे बंधुआ मुक्ति मोर्चा में भी सक्रिय भूमिका निभाने लगे और

कुछ दिनों के बाद वे बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संगठन मंत्री के रूप में भी कार्य करते रहे। ऐसे समाजसेवी एवं सामाजिक युवा कार्यकर्ता के अचानक निधन से समाज के दबे-कुचले एवं बेजुबान लोगों ने अपना एक कर्मठ एवं जुझारू साथी खो दिया है। श्री रमेश आर्य जी के निधन से जहाँ उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है वहीं आर्य समाज भी की भी अपूर्णीय क्षति हुई है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री रमेश आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त पारिवारिकजनों को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रान्तीय प्रभारी श्री मनोहर लाल चावला जी का निधन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रान्तीय प्रभारी श्री मनोहर लाल चावला जी का 18 जनवरी, 2022 को अचानक निधन हो गया है। श्री मनोहर लाल चावला जी केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के माध्यम से आर्य समाज के कार्यों को निरन्तर गति देने का प्रयास करते रहते थे। वह आर्य समाज सोनीपत के कई वर्षों तक प्रधान रहे। उन्होंने अध्यापन के कार्य से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् विजय हाई स्कूल सोनीपत की स्थापना की और वर्तमान में वह उसके अध्यक्ष थे। श्री चावला जी हरियाणा प्रान्त में प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के भी अध्यक्ष रहे थे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के माध्यम से युवाओं को आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों को

करने के लिए प्रेरणा देने के लिए हरियाणा प्रान्त में जो शिविर आयोजित किये जाते थे, चावला जी उनमें विशेष रूप से सहयोगी की भूमिका निभाते रहे। ऐसे कर्मठ आर्य कार्यकर्ता का निधन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री मनोहर लाल चावला जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त पारिवारिकजनों को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य भजनोपदेशक श्री भजनलाल आर्य जी हुए दिवंगत

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले श्री भजनलाल जी आर्य भजनोपदेशक का 16 जनवरी, 2022 को 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। वे ग्राम-मितरौल, जिला-पलवल, हरियाणा के रहने वाले थे। श्री भजनलाल जी पुरानी पीढ़ी के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं एवं भजनोपदेशकों में से एक थे। उन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में गठित 'आर्यसभा' तथा उसके पश्चात् हरियाणा एवं पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रचारक का कार्य किया। वे स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी के साथ भी निरन्तर जुड़े रहे। पलवल क्षेत्र के वे एक विख्यात उपदेशक थे। वे अपनी कविताओं की रचना स्वयं किया करते थे और वे अपनी क्षेत्रीय भाषा में धारावाहिक गाते थे। वह आर्य समाज द्वारा चलाये जाने वाले शराबबन्दी आन्दोलन, किसान आन्दोलन

एवं हिन्दी सत्याग्रह आदि आन्दोलनों में जेल भी गये। श्री भजनलाल जी अपने गाँव के दो बार सरपंच भी चुने गये। वह सदैव सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के शिविरों में भाग लेकर युवाओं को राष्ट्रभक्ति के भजनों के माध्यम से आर्य समाज के संगठन से जुड़कर कार्य करने की प्रेरणा देते रहे। ऐसे पुरानी पीढ़ी के आर्य भजनोपदेशक के निधन से आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री भजनलाल जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त पारिवारिकजनों को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

आर्य समाज शकरपुर के पूर्व प्रधान एवं मंत्री श्री पतराम त्यागी जी की धर्मपत्नी श्रीमती मिथिलेश त्यागी जी का असमय निधन

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं मंत्री श्री पतराम त्यागी जी की धर्मपत्नी श्रीमती मिथिलेश त्यागी जी का 7 जनवरी, 2022 को प्रातः 9.45 मिनट पर असमय निधन हो गया। श्री पतराम त्यागी जी आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली के कई वर्षों तक मंत्री रहे और वे हमेशा आर्य समाज के माध्यम से समाजसेवा के कार्य निरन्तर करते रहते हैं। आदरणीया माता जी हमेशा अपने पति श्री पतराम त्यागी जी के कंधे से कंधा मिलाकर आर्य समाज तथा समाज सेवा के कार्यों में लगी रहती थीं। माता जी का स्वभाव महिलाओं के लिए प्रेरणादाई है। वह सौम्य व मधुर स्वभाव की थीं। माता जी याज्ञिक और वैदिक सिद्धांतों को मानने वाली थीं, प्रतिदिन अपने घर दैनिक यज्ञ किया करती थीं और परिवार में होने वाले प्रत्येक विशेष कार्यों एवं त्यौहारों को यज्ञ से ही प्रारम्भ किया करती थीं। माता जी धार्मिक प्रवृत्ति की सद्गृहणीं थीं। वह धार्मिक कार्यों में हमेशा बढ़–चढ़कर भाग लिया करती थीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के नियम को माता जी पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ मानती थीं तथा स्वामी दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट रास्ते पर चलकर समाज के परोपकार के लिए हमेशा अग्रसर रहती थीं। आदरणीया माता जी

"अतिथि देवो भव" की उक्ति को अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए विद्वान् अतिथियों एवं अपने दरवाजे पर आगन्तुक महानुभावों का सेवा सत्कार करके एक अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है। माता जी ने पिछले वर्ष कोरोनाकाल में गरीब परिवारों को भोजन सामग्री तथा अर्थिक सहायता करने में भी काफी रुचि दिखाते हुए अपने परिवार के सदस्यों के साथ लोगों का सहयोग किया। माता जी आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली की सक्रिय सदस्य थीं और आर्य समाज के कार्यो में बड़ी रुचि से भाग लिया करती थीं। माता जी का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं के प्रति अनुराग तथा आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के प्रति भाव अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। आदरणीया माता जी के निधन से आर्य समाज एवं त्यागी जी के परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। ऐसी समाजसेवी माता जी के निधन की कमी हमेशा खलेगी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने माता जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

नवजीवन एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

'ऋतुराज बसन्त'

– सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल–कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुज्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण–शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव–किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख–शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव–छटा नव–सौन्दर्य एवं नव–आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द–मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव–विकासित पुष्प–दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव–समाज नाच–रंग, गायन–वादन आदि नाना आमोद–प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव–जीवन में नहीं अपितु पशु–पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव–अभिलाषा, नवआशा, नव–चेतना, नव–जागरण एवं नव–स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते–पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव–संकल्प का शुभ–संदेश दिया है। रीति–कालीन कवियों को तो पग–पग और डगर–डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए नव–साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकराः।'' छायावादी युग की प्रतिनिधि कवियित्री महावेदी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है,'' धीरे–धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,'' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलतः वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा–पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अतः वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुतः सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, ''वीरों का कैसा हो बसन्त'' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण–प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे।

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते–हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते–हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दुःख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुनः बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव–भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास–विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव–जागरण नवोत्साह, नव–चेतना, नव–प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन–जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन–जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट–पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्रज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अतः हार्दिक दुःख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन–धान्य–समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुनः अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुनः विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अतः ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आज्ञामय, सुख–सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रातः स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम–राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुनः सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट–काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

– डी–113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली–110087

विश्व शान्ति का अग्रदूत – अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

– श्रीमती अरुणा सतीजा

सत्यार्थ प्रकाश के प्रमाणिक संस्करण के लेखन के १२५ वे अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव के शुभ अवसर पर सभी आर्य जनों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। स्मारिका ''सत्यार्थोदय'' के सभी आयोजकों को आभार सहित धन्यवाद, जिनके अथक परिश्रम से, देश विदेश के विद्वानों एवं संन्यासिवृन्द के वेद आधारित सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश सम्बन्धित उच्च कोटि के विचार दूर दूर तक पहुँचा कर मानव जीवन में पुनः ज्योति की किरण जगा कर उनके जीवन में पुनः क्रान्ति ला देंगे, जो की समय की मांग है।

आज सम्पूर्ण विश्व मृत्यु के भयंकर भय से त्रस्त है। आज किसी का भी जीवन सुरक्षित नहीं है। मृत्यु का ताण्डव नंगा नाच चारों ओर दिखाई देता है। आतंकवाद, नस्लवाद, धार्मिक व भाषा की विभिन्नता, जातिवाद, सत्ता की भूख सब से बढ़कर भौतिकवाद आदि समस्याओं ने मनुष्य के जीवन को अशान्त कर रखा है एवं एअर कन्डीशन की ठण्डी हवा में भी मानव–हृदय रेगिस्तान की रेत की तरह तप रहा होता है।

आज अमीरी की होड़ है। बड़े बड़े उद्योगपति, होड़ में लाईन लगा कर खड़े है विश्व रिकार्ड में अपनी अमीरी का कीर्तिमान स्थापित करना चाहते है। वह यह भूल जाते है कि अति भौतिकवाद पतन का चिन्ह है। यह मृग तृष्णा है। धन से आनन्द तो क्या सुख की भी प्राप्ति नहीं होती। ऐसे वातावरण में स्वामी जी कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ही वेदों का संदेश दे कर विश्व बन्धुत्व की भावना को जागृत कर सकता है। मानव को मानव जीवन की कला सिखा कर उसे सच्चा मानव बना सकता है, ईर्ष्या–द्वेष की अग्नि से बचा सकता है। आपसी भेदों को मिटा कर प्रेम की ज्योति जला सकता है।

जिस समय स्वामी जी का भारत भूमि पर अवतरण हुआ था उस समय भी विश्व विशेष कर भारत विषम परिस्थितियों से धिरा हुआ था। लम्बे समय से देश पराधीन था, विदेशी जोक की तरह देश को चूस रहे थे। सभी उद्योग धन्धे नष्ट हो गये थे, किसान व जुलाहे आत्म हत्याएं कर रहे थे। देश छोटी–छोटी रियासतों में बटा था। शासक शौर्यवान होते हुए भी जात–पात के कारण सदा आपस में लड़ते रहते थे जिसका विदेशियों ने भरपूर लाभ उठाया। इस्लाम व ईसाई मिशनरियां येन केन प्राकारेण से हिन्दूओं के धर्म परिवर्तन में जुटी थी। सामाजिक व धार्मिक संकीर्णता के कारण, मजबूरी में जो एक बार धर्म परिवर्तन कर लेता था, वापस लौट कर नहीं आ सकता था। हिन्दू जाति का ह्रास हो रहा था, विदेशी शक्तियाँ निश्चिन्त थी क्योंकि हिन्दूओं के वापस जाने के द्वार सदा सदा के लिये बन्द हो जाते थे।

ऐसी विकट घड़ी में स्वामी दयानन्द व उनके शिष्य बढ़े और घोषणा की, कि ''धर्म च्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है इतना ही नहीं अहिन्दु भी यदि चाहे तो हिन्दू धर्म में प्रवेश पा सकता है'' इस घोषणा ने भूचाल ला दिया। पौराणिक, मुस्लिम तथा ईसाई मिशनरियां स्तब्ध रह गई।

स्वामी जी ने ऋग्वेद आदि का भाष्य किया अन्य आर्ष ग्रन्थों की रचना की, और उदयपुर पहुंच कर महाराणा के नौलखा महल में इस कालजयी अमर ग्रन्थ की रचना कर भारत के भाग्य का सूर्य उदय कर दिया। अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ने सबको प्रकाशित कर आर्य जन बना दिया।

स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है–'' एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनायें बिना भारत का पूर्ण हित होना कठिन है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है जहां भाषा भाव और भावना में एकता आ जाए वहां सागर की भांति सारे सुख एक एक कर के प्रवेश करने लगते है। मैं चाहता हूँ देश के राजा महाराजें अपने शासन में सुधार और संशोधन कर अपने राज्य में धर्म भाषा और भावों में एकता करें फिर भारत में अपने आप सुधार हो जाएगा।''

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने वेदों को आधार बनाया, उन्होंने अनुभव किया वेद ही मानव जीवन का आधार है जिन्हें हम भुला चुके है। उन्होंने वेदों को मांजा, शताब्दियों से उन पर जमी मैल को उतार कर उनका सत्य स्वरूप लोगों के सामने रखा और सिंहनाद किया– ''वेदों की ओर लौट चलो'' यही रास्ता है सुख और शान्ति का, जो आनन्द का धाम, मोक्ष का द्वार है।''

वेद आधारित सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथरत्न की सरल भाषा में रचना कर इसके माध्यम से समाज में व्याप्त प्रत्येक बुराई पर चतुर कारीगर की तरह हथौड़े और छेनी की चोट की।

उन दिनों देश अंग्रेजों के आधीन था ७०० वर्षों तक मुसलमान शासन कर चुके थे। परतंत्र रहना लोगों के स्वभाव में आ गया था। व्योमेशचन्द बनर्जी ने महारानी विक्टोरिया के स्वागत में अपने अध्यक्षीय भाषण में घोषणा की कि अंग्रेजी शासन ने हमें शान्ति और व्यवस्था दी, रेल व अन्य सुविधाएँ दी, सब से बढ़ कर शिक्षा का वरदान दिया। चारों और महारानी की जय जय कार हो रही थी। कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में जार्ज पंचम को long live the king का आशीर्वाद दिया। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा–

''विदेशी शासन कितना अच्छा हो पर स्वराज्य से नहीं''

विदेशी शासन के विरुद्ध इससे अधिक निर्भीक घोषणा क्या हो सकती है।

यह एक मेधावी एवं जुझारू यौद्धा की वाणी थी जिसने अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिला कर रख दिया। हमारा सब कुछ पराया था। अपना कहने को कुछ भी नहीं था। भारतीय बड़ी जिल्लत की जिन्दगी जी रहे थे। स्वामी जी ने अनुभव किया ''हीन भावना से ग्रस्त कोई व्यक्ति समाज और राष्ट्र उपर उठने की सोच भी नहीं सकता।''

तभी मैक्डानल की गर्व भरी बातों का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में लिखा– ''यह आर्यावर्त ऐसा देश है जिसके सदृश विश्व में कोई दूसरा देश नहीं इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते ही धनाढ्य हो जाते है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व पर्यनत आर्योका सार्वभौमिक चक्रवर्ती भूगोल में एक मात्र राज्य था अन्य सब छोटे–छोटे राज्य थे।

अद्वितीय ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का, जैकालिय जो एक फ्रांसीसी था, पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि ''बाइबिल इन इंडियां'' में उसने लिखा कि सब ''विद्या और भलाइयों का भण्डार आर्यवर्त देश है सब विद्या और मत सब इसी देश से फैले हैं'' परमात्मा से प्रार्थना करते है कि हे परमेश्वर! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्व काल में थी वैसी हमारे देश की कीजियें। कितना मनोबल बढ़ा होगा भारतीयों का, स्वाभिमान से सीना तन गया होगा। मैक्समूलर पर स्वामी जी के आर्ष ग्रन्थों का इतना प्रभाव पड़ा कि पढ़ने के बाद वह अपने प्रशासकों को भारत भेजते समय कहते थे तुम्हें अच्छा लगे या बुरा वास्तव में सच्चाई यही है कि ''मानवता के इतिहास की बहुमूल्य एवं निर्देशक सामग्री भारत भूमि में संचित है। इस क्रान्तिकारी ग्रंथ ने इतिहास के पन्नों को उलट कर रखा दिया'' तभी सरदार बल्लभ भाई पटेल कह उठे–

भारत की स्वाधीनता की नींव रखने वाला वास्तव में स्वामी दयानन्द ही पहला व्यक्ति था।''

डॉ० एनीबेसेंट ने समर्थन करते हुए लिखा– ''जब स्वाधीन भारत का मंदिर बनेगा तो उसमें स्वामी दयानन्द की मूर्ति की वेदी सब से ऊँची होगी।'' स्वामी जी ने भ्रम को दूर करते हुए इस बात को सिद्ध कर दिया कि आर्य आर्यावर्त देश के ही मूल वासी है इन से पूर्व इस भू–भाग पर कोई भी निवास नहीं करता था।

भारतीय जन मानस न वर्ण के अर्थ को समझ रहा था न ही व्यवस्था पर विचार कर रहा था। महर्षि ने हुंकार लगा कर कहा जिसे तुम वर्ण व्यवस्था समझें बैठे हो यह वेद विरुद्ध जाति–पांती है। यह मरण व्यवस्था है। मानव जाति में सब एक दूसरे के अंग है। यह सत्यार्थ प्रकाश का ही प्रभाव है कि अब देश विदेश के विचारक व लेखक ही घोषणाएँ कर रहे हैं कि वेद में जाति–पांती नहीं है। श्री अनवर शेख ने स्पष्ट लिखा–

कोई वेदों में नहीं है जांत-पांत,
यह सियासत दान की जादूगरी है।

एक फारसी के कवि ने भी लिखा है–

बनी आदम अज़ाय यक दिगरन्द

अपितु मानव जाति सब एक है।

बुद्धदेव जी विद्यालंकार के शब्दों में वेद का जादू संसार के सिर चढ़ कर बोल रहा है। और लिखा।

''बांट कर रखे तुम्हें कहते हैं जिसको जात पांत'

डॉ० अविनाश चन्द जी बोस समर्थन करते हुए लिखते है Brahman is made not born.

उन दिनों पाप पुण्य, एक समस्या बनी हुई थी पाप और पुण्य मनुष्य नहीं करता बल्कि शैतान करता हैं और कहीं कहीं यह भी भ्रम था जो कुछ करता कराता है वह भगवान है इस लिये मनुष्य का कोई दायित्व नहीं।

महर्षि ने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में एक बड़ी सूक्ष्म दार्शनिक सच्चाई का प्रकाश कर संसार में हल चल मचा दी।

मनुष्य का आत्मा सत्य असत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्या आदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

आज सभी न्यायालय विधान आदि इस बात को मानते है कि मनुष्य को अपने कर्मों का दण्ड–फल भोगना ही पड़ता है इसीलिए मनुष्य का पुनर्जन्म होता है। कर्म फल प्राणी मात्र के लिए अनिवार्य है। यह ईश्वर की न्याय व्यवस्था है। इसी के आधार पर ही स्वर्ग और नरक की प्राप्ति होती है। परन्तु पुराणों का स्वर्ग, बाइबल व कुरान का स्वर्ग तो स्थान विशेष पर है जहां भोग विलास की सामग्री मिलती है। अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में बताया गया कि सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष का नाम नरक है आज सारा संसार इस सिद्धान्त को मानता है। इसाईयों की एक पत्रिका में भी वर्णन आया है कि **''नरक व स्वर्ग आत्मिक अवस्थाएं हैं स्वर्ग प्रभु की उपस्थिति का आनन्द है और नरक प्रभु से ज्ञान की दूरी''**

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से लोगों को समझाया कि ईश्वर एक है वह और कहीं नहीं कण–कण में व्याप्त है। जो लोग अल्लाह को सातवें आकाश पर मानते थे उन्होंने भी ईश्वर की सर्वज्ञता को स्वीकार कर लिया है अद्वितीय ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में गुण कर्म स्वभावके आधार पर ईश्वर के १०० नामों का वर्णन है जो उसकी उपस्थिति को सिद्ध करते हैं परन्तु स्वामी जी ने कहा उसका मुख्य नाम एक है वह है ओ३म् जिसका जाप सभी को करना चाहिए।

मूर्ति पूजा का भी बहुत बोल बाला था स्वामी जी ने अनेकों प्रमाण दे कर इसका खण्डन किया परन्तु जड़ से इसे मिटाने में सफल नहीं हुए। स्वामी जी सुखी व आदर्श गृहस्थ के पक्षधर थे वह विवाह को अनिवार्य मानते थे और ब्राह्म विवाह ही आदर्श विवाह पद्धति है। स्वयंवर के पक्षधर थे उनके अनुसार पति पत्नी को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए तभी जीवन सुखी रहेगा। प्रत्येक गृहस्थ को प्रतिदिन पंचमहायज्ञ अनिवार्य रूप से करने चाहिए। चारों आश्रमों के नियमों का पालन करना चाहिए। यदि सभी सत्यार्थ प्रकाश की आज्ञानुसार गृहस्थ जीवन व्यतीत करें तो धरती पर स्वर्ग उतर आयेगा। यही संदेश आर्यों को विश्व को देना हैं।

गृहस्थ जीवन में बच्चों का स्थान महत्वपूर्ण है। संस्कार विधि में स्वामी जी ने १६ संस्कारों का बहुत सुन्दर वर्णन किया है ताकि बच्चों का सही निर्माण हो सके।

स्वामी जी ने घर को बच्चे की प्रथम पाठशाला माना है और मां को प्रथम गुरु। आठ वर्ष तक बच्चा घर रह कर मां के आंचल में जीवन की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करे। मां उसे सुसंस्कारों से संवार कर आदर्श चरित्रवान मानव बनने के लिये तैयार कर दे। सभी सरकारें कानून बनाकर अनिवार्य शिक्षा की घोषणा कर दे। स्वामी जी का विचार था कि जब समाज के सभी वर्गों के लोग शिक्षित होंगे तो अन्धविश्वास और कुरीतियों को कहीं स्थान नहीं मिलेगा। एक स्वस्थ व जागरूक समाज का निर्माण होगा। जिसकी आज अति आवश्यकता है।

वह शिल्प विद्या और विदेशी व्यापार के भी पक्षधर थे। विदेशी व्यापार के बिना कोई देश समृद्धिशाली नहीं बन सकता। टेक्निकल शिक्षा प्राप्त करने के लिये उन्होंने भारतीय युवकों को जर्मनी भेजने की योजना बनाई थी यद्यपि उनको इस उद्देश्य में सफलता नहीं मिली थी परन्तु स्वामी जी की प्रेरणासे शीघ्र ही एक शिल्प विद्यालय की स्थापना की गई थी। जिसमें बिजली तार रेल आदि कारीगरी सिखाई गई। पर वह सह शिक्षा के विरोधी थे।

वह प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली के पक्षधर थे। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा है कि एक राजा हो और तीन सभाएं हो जिनके सदस्य नगर के विद्वान् व श्रेष्ठ जन हो। मंत्री स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न होने चाहिए क्योंकि विदेशी शासक कुशल तो शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 6 का शेष

विश्व शान्ति का अग्रदूत - अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

हो सकता है हितैषी नहीं अवसर मिलते ही काटने से नहीं चूकेगा। आज तो देशी शासक काटने से नहीं चूक रहे जो देश का दुर्भाग्य है।

स्वामी जी कठोर दण्ड व्यवस्था के पक्षधर थे उन्होंने प्रमाण रूप में सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन किया है कि अगर कोई स्त्री पर पुरूषगामी है तो उसे सबके सामने कुत्तों से कटवा कर मरवा डालना चाहिए। अगर कोई पुरुष ऐसा करता है तो उसे, लोहे के पलंग को तपा कर लाल हो जाने पर जीते जी उस पर सुला कर भस्म कर देना चाहिए। इस दण्ड को कड़ा नहीं समझना चाहिए। ऐसा दण्ड देने से अन्य अब लोग बुरा काम करने से बचे रहेंगे। काश हमारे संविधान निर्माताओं ने सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा होता और इसकी अनुपालना की होती तो आज टी०वी० पर बलात्कार, हत्या व आत्महत्या की घटनाएँ सुनने व देखने को नहीं मिलती।

स्वतंत्रता की जो चिनगारी स्वामी जी ने जलाई थी उससे उन्हें पूर्ण विश्वास था कि देश एक न एक दिन आज़ाद होगा और उसकी शासन व्यवस्था कैसी हो। उन्होंने लिखा है वेद मनुस्मृति चाणक्यनीति विदुर नीति एवं महाभारत आदि के चिन्तन के अनुरूप व वर्तमान समय के अनुकूल होनी चाहिए।

वेद–संस्कृति के पश्चात् भ्रमवादी संस्कृति का उदय हुआ। जिसमें बुद्ध, शंकराचार्य, पीर, पैगम्बर, मौलवी, पण्डे, पुजारी इसके अग्रदूत बन गये। जिन्होंने जनता को गुमराह किया। मूर्ति पूजा, तीर्थ–यात्रा, ग्रहण, शुभ, अशुभ, ज्योतिषविद्या, टोना, टोटका, गण्डा, ताबीज, यंत्र–मंत्र–तंत्र, भूप प्रेत आदि से केवल वही साधु संन्यासी ही मुक्ति दिला सकते हैं। लोग इन अन्ध विश्वासों के मकड़जाल में फंसते चले गये।

इसलिए महर्षि दयानन्द ने वेदों की ओर लौट चलो का आदेश दिया और घोषणा की यदि देश को एकता और अखण्डता के सूत्र में पिरोना है सतसनातन वैदिक धर्म और संस्कृति को चिरजीवी बनाना है तो हमें अन्धविश्वासों, कुरीतियों तथा धर्म के ठेकेदारों से पिण्ड छुड़ाना होगा, वेद के पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने को जीवन का लक्ष्य बनाना होगा क्योंकि वेद ही सनातन चक्षु हैं। वेद से ही सत्यार्थ का विवेक होता है। वेद से ही परमार्थ का लाभ होता है। यही हम सब आर्यों का लक्ष्य है और होना चाहिये।

सभी आर्य भाई बहिनों व युवा पीढ़ी से मेरा कर बद्ध अनुरोध है कि इस महोत्सव के शुभ अवसर पर हम सब प्रतिज्ञा करें, एक संकल्प ले कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाश घर–घर फैलायेंगे। छोटी–बड़ी सभी आर्य सस्थाएं संगठित होकर वेद प्रचार करें। सभी प्रकार के मीडिया का सहयोग ले। मीडिया के दिल और दिमाग मे यह बात बैठा देनी चाहिए कि मारधाड़, हत्याओं आदि के अतिरिक्त जीवन का दूसरा पहलू भी है वह है प्रेम सहयोग, त्याग सेवा आदि, यदि प्रति दिन टी०वी०, रेडियों, समाचार पत्रों में जीवन के सही रूप को दिखा जाएगा। तो बच्चों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। बच्चे जैसा देखते है वैसा करते हैं। दूसरा आर्यजनों को संगठित होकर स्वयं एवं अपने युवाओं को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में सक्रिय राजनीति में भाग लेने की प्रेरणा करें। जैसा राजा वैसी प्रजा। तभी सत्यार्थ प्रकाश की सार्थकता सिद्ध होगी। उदयपुर नौलखा महल से सत्यार्थ प्रकाश की मशाल लेकर ही रवाना हो। तभी मिटेगा आतंकवाद का भय, धन लोलुपता की भावना आदि आदि तभी होगा विश्व भय से मुक्त सर्वत्र होगा शांति का साम्राज्य।

–जे-११०,अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-४ (राज.)
ek-#& 9460183872

चौ. राजमल आर्य जी का अचानक हुआ देहान्त

आर्य समाज के कार्यों में संलग्न रहने वाले चौ. राजमल जी आर्य, ग्राम व पो.-खरकड़ा, जिला-रोहतक (हरियाणा) का 90 वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया है। आदरणीय चौ. राजमल आर्य जी का पूरा परिवार आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत होने के साथ ही समाजसेवा के कार्य में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। आदरणीय चौधरी साहब स्वयं भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में सदैव अपना तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करते रहते थे। ऐसे समाजसेवी एवं आर्य समाज के प्रति समर्पित महानुभाव का निधन आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय चौ. राजमल आर्य जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा की ट्रस्टी श्रीमती शिवराजवती जी चल बसीं

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के पूर्व प्रधान स्व. श्री ओंकारनाथ जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवराजवती जी मानकटाला का दिनांक 19 जनवरी, 2022 को अचानक निधन हो गया है। आदरणीया माता शिवराजवती जी स्व. श्री ओंकारनाथ जी के साथ मिलकर सदैव आर्य समाज के कार्यों को गति देने में सक्रिय रहीं तथा श्री ओंकारनाथ जी के निधन के पश्चात् वह आर्य समाज सांताक्रूज के अन्तर्गत स्त्री आर्य समाज की प्रधाना के रूप में अनेक वर्षों से समाजसेवा के कार्यों को संचालित करती रहीं। वर्तमान में वह महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के ट्रस्टी के रूप में कार्य कर रही थीं। ऐसी सेवाभावी माता का निधन आर्य समाज संगठन एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रीमती शिवराजवती जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक संतप्त पारिवारिकजनों को इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

श्रीमती सरती देवी जी भी स्वर्ग सिधार गईं

आर्य समाज के कर्मठ सहयोगी एवं देशवाल खाप के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौ. शिवधन सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरती देवी जी, ग्राम-भईयापुर लाढ़ौत, जिला-रोहतक (हरियाणा) का विगत दिनों 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। आदरणीय चौ. शिवधन सिंह जी अखिल भारतीय देशवाल खाप पंचायत के अध्यक्ष होते हुए समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व हैं। उनके छोटे भाई आचार्य हरिदत्त उपाध्याय को उन्होंने अपनी पैतृक जमीन में गुरुकुल खोलने की प्रेरणा देकर गुरुकुल खोलने के लिए प्रोत्साहित किया और आचार्य जी द्वारा पिछले 25 वर्ष से गुरुकुल, लाढौत, भैयापुर, रोहतक का कुशलता के साथ संचालन हो रहा है। इनके परिवार में 6 नवयुवक संस्कृत अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। इनका परिवार पूरे क्षेत्र का प्रतिष्ठित आर्य परिवार है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीया श्रीमती सरती देवी जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

मा. बुधराम जी का भी असामयिक निधन

ग्राम-मोठूका (ढानी पोहकर की), तह.-नीम का थाना,जिला-सीकर (राज.) क्षेत्र के प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं शिक्षक के रूप में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त मास्टर बुधराम जी का 22 जनवरी, 2022 को प्रातः 10 बजे अचानक निधन हो गया है। मा. बुधराम जी राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट के समधी थे। श्री बुधराम जी अपने क्षेत्र में आजीवन समाजसेवा में सक्रिय रहे तथा क्षेत्र में उनकी विशेष प्रतिष्ठा थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का लम्बे समय से उनके साथ आत्मीय सम्बन्ध रहा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय मा. बुधराम जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

ठा. तेलू सिंह जी का 20 जनवरी को देहावसान

आर्य समाज के कर्मठ कर्मयोगी ठा. तेलू सिंह जी, फार्म हाउस, ग्राम व पो. -बाहरी, तह.-असन्ध, जिला-करनाल, हरियाणा का 20 जनवरी, 2022 को अचानक निधन हो गया है। आदरणीय तेलू सिंह जी आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर आर्य समाज संगठन से जुड़े और समय-समय पर आर्य समाज द्वारा चलाये गये समाजसेवी आन्दोलनों के आयोजन में आगे बढ़कर विशेष सहयोगी की भूमिका निभाते रहे। अपनी कर्मठता के कारण ही वह अपने गाँव के सरपंच भी चुने गये और वर्षों तक सरपंच के रूप में उन्होंने अपने गांव में समाजसेवा का कार्य किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय मा. बुधराम जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

श्री रणधीर सिंह आर्य जी का 90 वर्ष की आयु में देहान्त

आर्य समाज के कर्मठ कर्मयोगी श्री रणधीर सिंह जी आर्य ग्राम व पो-बालन्द, जिला-रोहतक, हरियाणा का विगत दिनों लगभग 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री रणधीर सिंह जी बचपन से ही आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत रहे और उन्होंने अपने पूरे परिवार का वैदिक संस्कारों के अनुसार पालन-पोषण करते हुए आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षाओं से ओत-प्रोत कराया। वह आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं समाजसेवी थे। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन तथा नशाबन्दी आदि आन्दोलनों में आगे बढ़-चढ़कर भाग लिया और जेल गये। उन्हें हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल जाने के लिए सरकार की ओर से पेंशन भी प्रदान की जाती थी। उनके सुपुत्र प्रो. वीरेन्द्र जी जिन्हें आर्य समाज के संस्कार अपने पिता जी से विरासत में प्राप्त हुए हैं। प्रो. वीरेन्द्र जी हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के 10 वर्षों तक राजनीतिक सलाहकार भी रहे थे। प्रो. वीरेन्द्र जी का सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ आत्मीय सम्बन्ध है तथा वे विशेष सहयोगी की भूमिका निभाते रहते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदरणीय मा. बुधराम जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त पारिवारिकजनों तथा इष्ट मित्रों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़, राजस्थान में नव-निर्मित यज्ञशाला में 35वाँ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ हुआ सम्पन्न

हुए। वहीं गुरुकुल में पढ़ रही छात्राओं के अभिभावक भी यज्ञ में सम्मिलित थे। यज्ञ की व्यवस्था का दायित्व आचार्य सोमदेव जी के छोटे भाई श्री गोविन्द जी, पं. शिवलाल जी, श्री दशरथ आर्य जी व श्री कुंजीलाल आर्य आदि ने कुशलता के साथ संभाला। इन्हीं कार्यकर्ताओं की टीम भोजन, आवास आदि की भी व्यवस्था देख रहे थे।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल के छात्राओं के भी अनेक आकर्षक एवं प्रभावशाली कार्यक्रम हुए जिसमें अष्टाध्यायी व्याकरण पर अंताक्षणी, सत्यार्थ प्रकाश पर प्रश्नोत्तर, संध्या, यज्ञ, महर्षि दयानन्द एवं गुरुकुल शिक्षा पर व्याख्यान, श्लोक एवं मंत्रों आदि विषयों पर छात्राओं ने शानदार कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन सभी कार्यक्रमों का लाईव प्रसारण गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी तृजकिशोर ने किया। वहीं मिशन आर्यावर्त चैनल के निदेशक और आर्य समाज के आई. टी. सेल के संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने छात्राओं तथा आचार्य सोमदेव जी के साक्षात्कार लेकर अपने कैमरे में रिकॉर्ड किया, जो मिशन आयावर्त यू ट्यूब चैनल पर प्रसारित किया जायेगा। यह त्रिदिवसीय कार्यक्रम निःसंदेह अत्यन्त सफल एवं प्रभावशाली रहा।

कन्या गुरुकुल में नव-निर्मित भव्य यज्ञशाला का विधिवत औपचारिक उद्घाटन स्थिति अनुकूल होने पर किया जायेगा, किन्तु अनौपचारिक रूप से वेद पारायण यज्ञ का यह आयोजन नव-निर्मित यज्ञशाला में हुआ। यज्ञशाला की भव्यता देखते ही बनती है और इसके लिए सभी ने सेठ दीन दयाल आर्य जी का धन्यवाद एवं प्रशस्ति की। आचार्य सोमदेव जी ने सभी संन्यासियों एवं विद्वानों का शॉल, ओ३म् पट्ट एवं दक्षिणा आदि से सम्मान कर सबकी शुभकामनाएँ ली। उनके अतिरिक्त अत्यन्त श्रद्धालु एवं आर्य विचारों से ओत-प्रोत श्री सुधीर यादव जी अपनी पत्नी एवं बच्चों सहित तीनों दिन यज्ञ में पधारे और सभी विद्वानों को अपनी ओर से 1100 रुपये प्रति व्यक्ति भेंटकर सम्मानित किया।

गुरुकुल के सभी ट्रस्टियों एवं अधिकारियों ने आगन्तुक

विद्वानों एवं आर्य महानुभावों का आभार जताया और आचार्य सोमदेव जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि आज कन्या गुरुकुल का जो पुनरुद्धार हम और आप देख रहे हैं यह सब आचार्य सोमदेव जी शास्त्री के संकल्प एवं पुरुषार्थ का परिणाम है। अन्त में 16 जनवरी, 2022 को दोपहर सुरुचिकर भोजन के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/- में

एक वेद सैट मात्र 3100/- रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य 4100/- रु. में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002 • दूरभाष :- 011-23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।